International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 03(II), July - September, 2023, pp. 89-92

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और समायोजन

दुर्गेश शर्मा*
डॉ. सुनील कुमार**

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी घटक का प्रखर एवं चरित्र सम्पन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता का पुर्नजीवित तथा पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने जीवन को सुरक्षित करता है एवं एवं अपनी आजीविका का चयन करता है। मानव को अपने अस्तित्व की सुरक्षा, जीवन के संरक्षण, वातावरण से सामंजस्यपूर्ण समायोजन एवं विकास तथा सम्मानपूर्वक जीविकोपार्जन करने के लिए भोजन, वस्त्र और आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक है। भोजन, वस्त्र एवं आवास से मनुष्य का शारीरिक विकास और सुरक्षा तो सम्भव है, परन्तु समाज में उसके सम्मानपूर्ण एवं समुचित जीवन संचालन के लिये उसका मानसिक, सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है, जो केवल शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है।

प्राचीन भारत में शिक्षण व्यवसाय को बहुत पवित्र कार्य माना जाता था। सरस्वती के पावन मंदिरों को गुरूकुलों की संज्ञा दी गई है। शिक्षक को 'गुरू' शब्द की पवित्रता से अलंकृत किया गया। प्राचीन भारत में संस्कृति व सभ्यता का संरक्षक शिक्षक ही था। उसे इस व्यवसाय में उच्च, गौरवपूर्ण प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त था। मानव इतिहास की श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस व्यवसाय को अपनाया है। बुद्ध, ईसा, गांधी, सुकरात, मुहम्मद ये सभी सच्चे अर्थ में मानव जाति के शिक्षक थे। समय गतिशील है और इस गतिशीलता के क्रम में शिक्षा क्षेत्र भी परिवर्तित हुआ। इस काल में 'विद्या' की प्रधानता 'अर्थ' की प्रधानता में परिवर्तित हो गई और गुरू शिष्य की वह पुनीत परम्परा विलुप्त हो गई। शिक्षा का स्वरूप इस काल में बिल्कुल ही बदल गया। साथ ही शिक्षक की भूमिका भी बदल गई। जो व्यवसाय परंपरा से श्रेष्ठ रहा है आज इस व्यवसाय में शिक्षक अपनी स्थिति से क्यों असंतुष्ट हैं ?

व्यावसायिक संतुष्टि

व्यावसायिक संतुष्टि का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति को अपने व्यवसाय से प्राप्त होने वाला संतोष है। व्यावसायिक संतुष्टि एक सुखद संवेगात्मक अवस्था है जो अध्यापक के कार्य को निर्धारित करती है।

किसी भी व्यवसाय के लिए सन्तुष्टि एक आवश्यक तत्व है। अगर व्यक्ति अपने कार्य से सन्तुष्ट नहीं है तो उसके लिए अपने व्यवसाय में अपने कर्तव्यों को ईमानदारी व दक्षता से कार्य करना मुश्किल होगा। एक व्यक्ति को अपने कार्य के प्रति संतुष्टि कई प्रकार की अभिव्यक्ति पर निर्भर करती है। यह अभिव्यक्तियाँ कुछ

* शोध छात्रा, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** निर्देशक, शिक्षा विभाग, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

विशेष तथ्यों से सम्बन्धित होती है जैसे उसका वेतन, कार्य की दशायें और अन्य लाभ। शिक्षक में कार्य सन्तुष्टि के सन्दर्भ में कुछ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य भी हैं, जैसे – शिक्षक का आन्तरिक पक्ष, वेतन कार्य की दशायें और प्रोन्नति, शारीरिक सुविधाएं, संस्थागत योजनायें व परियोजनायें, छात्रों के साथ सामंजस्य, अपने सहकार्मियों के साथ सम्बन्ध आदि।

यह एक अभिवृत्ति है जो व्यवसाय से सम्बन्धित वांछित और अवांछित अनुभवों का संतुलन एवं संयोग का परिणाम है। व्यवसाय सन्तुष्टि का सम्बन्ध व्यवसाय के प्रति कर्मचारी की दक्षता से तथा कर्मचारी की वैयक्तिक प्रसन्नता से है। इसलिए मनोवैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित लोगों का ध्यान व्यवसाय संतुष्टि प्रत्यय की ओर निरन्तर आकर्षित होता रहा है। संतुष्टि किसी भी व्यवसाय का एक आवश्यक पक्ष है। जब तक व्यक्ति अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होता तब तक समुचित रूप से अपने कर्तव्य का निर्वाह करना उसके लिए कठिन रहता है। संतुष्टि एक व्यक्ति का व्यक्तिगत स्वभाव है जो किसी व्यक्ति परिस्थिति के प्रति उसकी व्यक्तिगत भावना है। कुछ व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य से संतुष्ट होते है जबकि कुछ असंतुष्ट। यह प्रभाव संज्ञानात्मक तथा व्यवहारात्मक तत्वों से निर्मित होता है ये तत्व प्रत्येक व्यक्ति में उनकी तीव्रता तथा स्थिरता के पर अलग–अलग होते है।

लॉक (1969) के अनुसार – ''कार्य संतुष्टि कार्य के विभिन्न वस्तुओं के अवलोकन तथा मूल्यांकन के पश्चात् उत्पन्न सुखद भावात्मक मनःस्थिति है।''

समायोजन

समायोजन अविराम गति से चलने वाली प्रक्रिया है। जिसकी सहायता से व्यक्ति का जीवन अपने आप तथा पर्यावरण के मध्य अधिक सामन्जस्य बनाने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार व्यक्ति जिसकी कुछ आव यकतायें होती हैं और जो भौतिक और समाजिक वातावरण में रहता है, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा अपनी आवश्यकताओं के अनुरुप अपने लक्ष्य को निर्धारित करता है। यह लक्ष्य व्यक्तित्व अथवा पर्यावरण दोनों से सम्बन्धित हो सकता है। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में व्यक्तिगत तथा पर्यावरण में स्थित स्वभाव, आदतें, चिन्तन प्रणाली, सामाजिक आर्थिक स्थिति, पारवारिक दशा आदि अनेक बाधायें आ सकती है, किन्तु व्यक्ति बाधाओं को दूर कर विभिन्न प्रयत्नों से लक्ष्यों की प्राप्ति की कोशिश करता है। लक्ष्य प्राप्त होने पर वह प्रसन्न और सन्तुष्ट हो जाता है और समायोजित कहलाता है। यदि व्यक्ति किसी व्यवसाय या नौकरी से जुडा है, तो उसे उसके पर्यावरण के आधार पर समायोजित होना पडेगा।

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ समस्याएँ और परेशानियाँ होती हैं। किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि वह कितनी समस्याओं और परेशानियों का सामना करता है बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि वह इन समस्याओं और परेशानियों के प्रति किस प्रकार से प्रतिक्रिया करता है या इनमें वह किस प्रकार से समायोजन करता है। समायोजन, मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण प्रत्यय और चर ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक मनुश्य की यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया या अवस्था है। इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने से पूर्व आवश्यक है कि इसके अर्थ को समझ लिया जाये।

आइजनेक व अन्य के अनुसार – ''समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ तथा दूसरी ओर वातावरण के कुछ दावे पूर्ण रूप से सम्मिलित होते हैं अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आवश्यकताओं और दावों में सामंजस्य का सम्बन्ध प्राप्त होता है।'

बोरिंग, लैंगफेल्ड एवं वेल्ड के अनुसार – ''समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि समायोजन एक ऐसी रचनात्मक और गत्यात्मक पद्धति है। जिसके अन्तर्गत हम समाज के मानदण्डों, प्रतिबन्धों, बाधाओं, परम्पराओं के साथ संतुलन, सामंजस्य तथा मेल करते हैं। जिससे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है साथ–साथ समाज की मर्यादाओं का पालन होता है।

समायोजन प्रक्रिया के अन्तर्गत जीवन की समस्याओं का व्यक्ति प्रभावी रुप से सामना करता है और सन्तोषजनक समाधान करता है। यह व्यक्ति की मानसिक स्थिति का बोध कराता है। व्यक्ति के द्वारा भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में विशिष्ट व्यवहार करने की प्रक्रिया समायोजन कहलाती है। समायोजन प्रक्रिया अनेक निष्कर्षों और तथ्यों को सूचित करती है। जैसे–भावी जीवन की आवश्यकतायें, मानसिक तनाव तथा अभावों को हल करने की कुशलता, मन की शांति आदि। यह मानसिक और व्यवहारिक लक्ष्णों की उत्पत्ति भी करती है।

अध्ययन का औचित्य

व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा सर्वाधिक साधन होती हैं। जीवन में सफलता की कुंजी शिक्षा में ही निहित होती है। इससे मनुष्य के चारित्रिक, मानसिक, नैतिक, बौद्विक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। भारतीय संविधान का मूल उद्देश्य भी यही है कि सबको न्याय, समान शिक्षा तथा स्वतंत्रता प्रदान की जाये। शिक्षा मनुष्य का एक महत्वपूर्ण संस्कार एवं वर्तमान में सामाजिक जीवन के लिए एक अनिवार्य तत्व है किन्तु यह देखा जा रहा है सरकारी हो या अर्द्वसरकारी अथवा गैर सरकारी विद्यालय, सबमें शिक्षा का स्तर गिरता ही जा रहा है। बुनियादी शिक्षा कमजोर रहने पर एक बालक दसवीं श्रेणी तक तो पहुँच जाता है किन्तु फिर भी उसे भाषा, गणित तथा अन्य विषयों की सामान्य जानकारियॉ नहीं हो पाती। अतः आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा को सही अर्थों में समझा जाये। इसके लिये संस्कारित, समर्पित एवं निष्ठावान शिक्षकों की इच्छाशक्ति को जगाना अत्यन्त आवश्यक है।

शिक्षक के शिक्षण कार्य को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक शिक्षक की व्यावसायिक सन्तुष्टि है क्योंकि शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षण व्यवसाय में उच्च होगी तभी वह प्रभावी शिक्षण कर सकता है, जिसके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक विकास किया जा सकता है। व्यावसायिक संतुष्टि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का प्रमुख लक्ष्य है। व्यावसायिक संतुष्टि जहाँ व्यक्ति को सुखी जीवन प्रदान करती है वहीं शिक्षक को समायोजित बनाती है।

आज समाज के सभी व्यवसाय से जुड़े व्यक्ति तनावग्रस्त है। प्रायः प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रवेश से पूर्व अध्यापकों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति रूचि, उत्साह व कुछ नया करने की तमन्ना रहती है। परन्तु कुछ वर्षों के उपरान्त वह निरूत्साही, निराशावादी, तनावग्रस्त व अपने आपको थका हुआ सा महसूस करते हैं तथा अपने आप को कुछ नया न करने योग्य मानने लगते हैं। शिक्षण व्यवसाय में रत व्यक्तियों को प्रशिक्षण संस्थाओं में अनेक प्रकार से समायोजन करना होता है। समायोजन की इस प्रक्रिया में कई बार अध्यापक को जहाँ सन्तुष्टि होती है, वहीं दबाव का भी सामना करना होता है। दबाव की स्थिति तब आती है जब अनिच्छा से समायोजन करना पड़े। अध्यापकों की उत्कृष्टता को प्रभावित करने में कार्य सम्बन्धी दबाव प्रमुख भूमिका निभाता है। यह दबाव अध्यापकों की शिक्षण गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। शिक्षक के आस–पास का वातावरण भी शिक्षक के समायोजन को प्रभावित करता है। आये दिन हम दैनिक समाचार पत्रों में असमायोजित शिक्षकों के व्यवहार को देखते हैं। इन समस्याओं का अवलोकन करने के बाद क्या वास्तव में व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षकों के समायोजन को प्रभावित करती है ? सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् शोधकर्त्री के मन में कुछ प्रश्न उभर कर आए, – क्या सरकारी व गैरसरकारी स्कूल में कार्यरत अध्यापकों के व्यवसायिक सन्तुष्टि के स्तर में कोई अन्तर पाया जाता है? क्या सरकारी व गैरसरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन में कोई अन्तर पाया जाता है? क्या लैंगिक आधर पर महिला व पुरूष अध्यापकों की व्यवसायिक सन्तुष्टि के स्तर में कोई अन्तर पाया जाता है? क्या सरकारी व गैरसरकारी स्कूल में कार्यरत अध्यापकों के समायोजन में कोई अन्तर पाया जाता है? क्या महिला व पुरूष शिक्षकों के समायोजन में कोई अन्तर पाया जाता है? इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए शोधार्थी ने इस समस्या का चयन किया।

इस विषय पर शोध का महत्व इसलिए भी है कि शिक्षकों की विभिन्न परेशानियों जैसे वेतन की कमी, पदोन्नति के अवसर पर पक्षपात, कार्य का दबाव, शिक्षण से अतिरिक्त कार्यभार, शिक्षक का असमायोजित होना

आदि समस्याओं की तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित किया जा सकेगा। इन समस्याओं को दूर करने की सरकार से अपेक्षा भी की जा सकेगी। अच्छे विद्यार्थियों का निर्माण तभी हो सकता है जब शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो। इस संदर्भ में इस समस्या का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना आवश्यक हो गया है कि विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि है या नहीं? यह एक शोध का विषय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अस्थाना, विपिन (2009), मनोविज्ञान : शिक्षा में मापन एवम् मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा ।
2. आबिद रिजवी, : मेगा हिन्दी शब्द कोश, मारूति प्रकाशन, 33 हरि नगर, मेरठ।
3. गुप्ता, एस. पी. (2007) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. चौबे, सरयू प्रसाद (2005). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस।
5. चौहान, वी. एवं जैन, के. (2003) निर्देशन एवं परामर्श. अंकुर प्रकाशन नयी दिल्ली ।
6. पाण्डेय, के. पी. (1987). शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन के आधार, अमिताभ प्रकाशन, मेरठ।
7. पाठक, पी. डी. (2011). शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
8. सिंह, गया (2012) अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

❖◆❖